

॥ प्रथम ब्रह्मदेवे देवा पास्तनि मुख्यशत्रु
 ॥ पास्तायं भुमितु ताचेत् तुष्टु स्तनि प्रियव्र
 ॥ तस्मै सेलं अमनि रति लोकभरणसो
 ॥ स्वकरणं भान्यरणं विहिताचरणे
 ॥ इत्यवयेष्ठि हरि सिरुरणस्यालादेधी
 ॥ ऋषीयातयामधे येकप्रियास्त्रु चित्तम्
 ॥ अवदत्तु तमतोमां दिवरिव सवित्तं थ
 ॥ धावेटाकीर्ति किपाय ॥ यालावतीसा
 ॥ पत्तमायकलहकारणी बलायमारि
 ॥ शद्वश अधिगायत्रे णपोता ताय वृच
 ॥ थाकरिशि काय हातो अनाधीकारि
 ॥ काय तु सावे सायाचाठाय नोहेनो हने
 ॥ ऐराय कारेपुरलाभयुर्दीयमायेदाय
 ॥ न से तु जाए कराय सो प्रदाय हातो समु
 ॥ दाय मदिय तुलाया लिसापत्तमाये
 ॥ कुनिमो कुलुधावेधाय नदने करित
 ॥ भायवाय सोपरिवाक्यं चीयुसा
 ॥ यकाने टोयीयलाकाय कोला रूप
 ॥ बोलत सेउप यक्षलुत आयपदिक
 ॥ रुनिधे निधे निधे निधे निधे निधे
 ॥ ३ उमजत सदिव्य इनपदाय अतरं
 ॥ इथ जो असा
 ॥ गायं गुरुद्वय अम् येकान
 ॥ लघ्यायं याच्यं हृपावक्षे मास्तेउद दिरा
 ॥ जस्तत सराय येथे येत्तानि समावते स्या
 ॥ त्रृष्णात्वं क्लिव सेकर्णं त्रृष्णात्वं तरो
 ॥ यगाइवास्तराये पुरिवराती कुनिधे इ
 ॥ नायनपाव द्विप्रस्तवाय पिसिलराज्ञ
 ॥ षुसाय हरिसाय नाते गाय या विन
 ॥ नैयर्थ्य चीयव साय वेगी अपसरस
 ॥ रमागे रे ॥ यालादेव सात्वजालारे ॥ ११
 ॥ असेपरिसंतात्तान चरणवृपाचेसंता
 ॥ नंतानुग्रुनिते लातुरिधसति दुष्टवच
 ॥ नवाणभानुतुटेत सभानन गतभा
 ॥ ससुनिमानहं तु भासभासदातभास
 ॥ त्यानभासभासलाइभावरि समाते इ
 ॥ भावरिलपतन तुल्य अंतलागुमा न
 ॥ णकलंडले विभान राजमाते गलिते
 ॥ मानवतीमान वकरि मान सात
 ॥ जाणपणे जाणव की संचर लिग्लान रु
 ॥ कमवान जाला लमान अलेवाटे लेनिदाने
 ॥ पारदान शांति की शहान की दृताव
 ॥ दान छपण्डे तदान तोषदान वा मि

॥ दोनवारि स्तो बंतकरण न वाहि ते
॥ विलोस जाण मानि विष रित्त विंदन
॥ प्राण जाइल तरिजावो परिज्ञान को
॥ वैरजी चेऽर्जुं भगवान इच्छेथ
॥ तकरुपान है पान साम्य बोल फोल
॥ एगि बिणे धान चरु पति किमि पिल सो
॥ पान शमन अहो उक्यान सनी
॥ मुक्या किं प्रिज्ञ रामुक्यावा गदगदर
॥ नकरित जननि सादनी आला हो याला
॥ देवा॒रा असाम नुकर मणी तोक सु
॥ शुक्रोक्येक मातृगृहि शोक करिता व
॥ वीशो ज्ञाक जाता तम छरा विष बोक त सु
॥ धोकक दित शाद्ध फोक सांगत सेधो क
॥ थोक गोक टोक टोक भाव छाव रिको कुन सु
॥ मुखीत सि विलोकुनि स्तुलोक वाक्य
॥ अकर्णुनिकरि विवेक खोल बोल
॥ लीकुनिती शुक्रान न हो सांगति निति
॥ शारथ अधीत हो कधी त दिवी दित
॥ अकीले न ये धीतव्य र्थ सो तुर्न देइ
॥ हृषीत शीती दयकहारितीत अंतासाव
॥ ध होयी ह रिपदी विनित भन्ती दुर्ल
॥ भ अवनित हे धी स वीन वानि त
॥ कारिन सितल बहु प्रितव सन
॥ गीत गाय वीत सोठ श्रीति न धरि
॥ कुछुरुप वर्णलै शुतीत परश्वलै
॥ सर्वाति त्रब्रह्म देव संस्त वी त शाच
॥ देव तडप की तन्त्रोक्ति की धी
॥ हीलप वीत त्रोजपण हावे सुप्रवित
॥ नेत्रोक्षील शुव शापाव सुप्रभुति सु
॥ शुभ्रुवय ब्रह्म देवतपक रहे कधी करम
॥ जेतुमज्जर से समज समज ही त बर
॥ वेतुज्ञावाप भजाय गजासक करा
॥ ज्य सुत्राटाक नेत्रोपुजा वो जाक
॥ ननिध्वजाल विमाना पानी गजाला
॥ गुनियोज्ञावयामा सुर्वत सिरिज्ञात
॥ निपिंजाक निधुज्ञारावीज्ञात सा त सा
॥ धी साक्षे देउ निश्चुति विन्मी राजा त व
॥ धीतर वेत्ती त वोध कोला हो साला
॥ देव सात्य जाला ॥ ३ ॥ मुला वयतु
॥ स्तेलाहान तुहालागल्याता हान उहक
॥ न मिळती धीहा निधैर्य पा हिजेम
॥ हान तु ज्ञीवाक बुधी असो अता
॥ मद्दु धी पासि जा डाण हेशा

॥ हाण पण सुज्ञो निर्स तपाइ धीवा
॥ हान होउनि फीरसी तेहा देवपोटल
॥ संशय फीटल दुख अटल सोखवा
॥ टल विषय विटल दुरित घटलल
॥ फीटल कुमति सुटल न यनका
॥ कर्टल पटोपाटल नेत्रमेउ नेत्र
॥ अलप्रेम दाटल विठल हृपाहो य
॥ द्योयतुज्ञे माझे बरहो इलज्ञाइलहे
॥ यदे धील भाय देइल देवध्रवपद
॥ मण सार्वभौमरा उद्य देधीलकणि
॥ लज स सोन्यापुटे केशील देहे नोहुतो दिरि
॥ हित तुला सिथील देहे नोहुतो दिरि
॥ मधिले पाही ज्ञानि गमदही उगतं मु
॥ तातपक रिवे जीज्ञाइरेकनाहो या०
॥ ४ ॥ एकुनिमते न्येवो न दिलावनाक
॥ डेडाल पुटे हया खोल खोल पर्वताच
॥ जोल तेथे कै यीउद्धका धी वोल जोउ
॥ शोटे मधे काटे तोणे फाटे पाय ज्ञाति
॥ मगउपवासि श्वो लबले सांभा

॥ डेडाल पुटे हया खोल खोल पर्वताच
॥ जोल तेथे कै यीउद्धका धी वोल जोउ
॥ शोटे मधे काटे तोणे फाटे पाय ज्ञाति
॥ मगउपवासि श्वो लबले सांभा

॥ कीत तोलवदन को मायी लं अधर
॥ स हीत सुखले के पोल का कप
॥ द्वाही अलोलवरु नित पन तथा तर
॥ उत्तर तणु वर्ष तिजी जो ठये तिउद्धा
॥ या अह्या पाइला स्था भाज ति बिह्या
॥ तुकरणा वी ना अह्या ला गुनि
॥ छावं नाही वृक्षा को टर ढोल पीतव
॥ जिअंदो लित गीरि त्रो लीत सेरा
॥ उवं जे पो मानि मले फोल अंतो का
॥ यकरु कले करु कसाकसा देव
॥ मला के सारि सेल के हापाहीन
॥ रा हीन पाइस्तु नि परम अव
॥ त्रिन प्रे मभ रे रडे पउ धीरवीर
॥ पुकषवरे सुरत रु सम परम गुरु
॥ युकामुकी मात्री मायदेखता चीवा
॥ उकोडे बाछुत सोगम्पुडे तसायोग
॥ वेदु निघउ देवत्र धीदी देखु नि
॥ बेले पाइघालि मीठी धूवा झुठोल
॥ जात रिउ डाउ ठीकी मपी नुठी मु
॥ ठी मात्री चरण धरु नि कठी

॥ णावा वपर हितवहै नोबद सा
॥ कर मीठी तै से बोबडे बोल कसा
॥ बे डे बूले दा रव का देवदा खव का
॥ देवभुजुन माझे करिम नोरथ
॥ पुर्ण तुर्ण हूफा करु नि सांगाल

॥ एनिवारं वार विन बी ये शाला ॥

॥ १८ ॥ - प्रार्थि ॥ रेखा द्वारा जर्वंशा
॥ वंतशा ॥ रु सरात्य सरवर वियोगीत बा
॥ नकल हेसा ॥ अंतो के निगलि तोजारि
॥ यंसुसा ॥ भोसा या गभि सारे गीं सावय
॥ लागी धी साध, राज गीवी सिविध स

॥ तेहापीहारदूरे लही साम
॥ अंगीकरा वित्तरा में प्रांसा शीर्णीर्णी
॥ निश्चारे शुष्क करं वेस्यदेह मांसा ॥ सं

॥ सारदुख विधं सावथा लाजिष्ट प्रश्नो
॥ जीसंसारी कर्तनर हित असावे ॥ केवल वि
॥ विकदे शिलुकदुर्वो सनारची त पृष्ठासना
॥ वे रिम-त्रादि वासना युक्त श्रीहरु फास
॥ नाक प्रितव शावे अब्रजादि धरवन भोगी
॥ रुसावे यह जाला भस्तु द्वृद्वृद्वा ति

॥ १९ ॥
॥ तिविमसरपणे विलसावे आमा नि
॥ दिसाधन भगवत्ति ते जिपुसावे अंतर
॥ व्याह्यवे राय भाय मा त्रि यो य सदाच
॥ रेखी मन सकसा वे दुराग्रह वितंडवाद
॥ नकरुन स त्रि त्रिश्वरण समुरुवा कमप
॥ रिसावे त्रिय भाग तुर्व रित शावे रित
॥ टावे निरल सपणे चीतवडा वे त्राले मु

॥ हुतोपासो निश्चाय्या सनस्य निसापरो
॥ द्वाही अलोलवरु अपण अनभुन ब्रैल
॥ रंझी सहस्रद लपि कजास दुलध्या नमान स
॥ पुजन अज्ञातप निवेदना नंतर प्राप्तः स्वान संध्या
॥ ब्रह्मस त्रि मिश्रीतप रमेश्वरा चन्द्रभरं भावे पुरुष
॥ सूक्तद वोडवा अप्यारेय शोकलव्यो धारे तेन भय
॥ तेषो लिहारु मइले षाले ख्यासे के ती

॥ सूर्य मंडली जली रुक्षिलिङ्गमुर्ति स्वरूपशी
॥ हरिसपुत्रावे भगस्य स्तीकासनि मिलिताधर वि
॥ यो गितदेतपकी अस्तु द्वरसनासमकाय शिरो
॥ श्रीवज्ञाधीनी लिततेन त्रजत्वमुद्रा धृत हृष्ट मिलि

॥ महाविकृष्ट यो ध्यान धरा वे आभक भक्ते चरणके
॥ मक्कमक्कमक्कमाक्का माटी तह स्तकम ठकरकमव
॥ मुखिकमक्कनेत्रकमलमाहा विमलविग्रह भ

॥ नक्कमनेभ्रमर जीवन साधकनेत्रषटपद्मारा म
॥ सतलजलदश्यामकनकमुगुह कनककडल
॥ कनकहरकनकेयुरकनककटक सोटी
॥ कटकाहृति आकपट अति निकटक न

॥ २० ॥ श्रावणा ॥

(24) ७
॥ कपटालं हतकनं दृष्टिकारकपरमस्त्रं संन
॥ श्यास्येषवरहनोधुलयतुभूजिश्चास्यक
॥ गंदा पद्मपितां वरधरश्चीवत्सकेस्तुभव्य
॥ पादलं दीनिवनमालाकालेत्रयावाधीत
॥ स्यैश्नां नानं देकमुन्नीचारे कैकावैयवि
॥ भीतस्थीरकरितजावेमगवा नैव वैरजीतकपड़ी
॥ तावे॥ जीतिताजीतितानखशिखचीतावैस्य
॥ दरो मांचगद्दादिभवश्चावेभगवंतीप्रेमानं हे
॥ मगतेणोसाक्षात्कारे सकलमनोरथशिष्ठ
महोवानानेजानेदंपदिपावावैतेसाबहुंवहु
॥ प्रकारेसजनसाप्रदायसिशीला मगदेश्चा
॥ धीकारार्थपुणीहपाकेश्चेलशीला वरदप
॥ शहस्रकेमस्तकस्यीलादेश्चत्रवणीला
॥ गुनश्चरणमनादिइदीयासनकठताप्रबन्ध
॥ सहीतद्वादशाक्षरवास्तदेवमनेउपदेशला
॥ तोअसुपद्योपनिषदोकस्यायोदकवृहद्द्विदु
॥ अवणीसूक्तिपुणीमवेशला तोअहंप्राप्तिक
॥ वास्तदेवसर्वमिष्ठनुभवेअहंसमुद्रु
॥ श्वलितमुक्ताकौरेऽवेशलाकटंगतचा
॥ मिकरकतयुरुपदेष्टेऽदर्शदर्शनेलाभ
(24) ८
॥ लाएवश्चीयुरुपदेष्टेऽदर्शदर्शनेलाभ
॥ देवजाणुमिवाहुरुपदेष्टेऽदर्शदर्शनेलाभ
॥ लनेस्तनवकलेउकलभानीमानसअनुकु
॥ जजेहाषुके तेहुलाणेवायु
॥ दुलबोधुनधे तेहुलकमीनपेटनि

(25)
॥ धृपहीलेचीप्राप्तीवमाप्तीमानुनष्टतकृत
॥ पणोराहीला अपरिहार्थुपकारकर्ता
॥ ब्रह्मपुत्रदेश्चिकरायप्रदक्षुणुननमस्कारी
॥ लानिर्णयामतितपावलद्यस्तातही स
॥ गुणसाक्षात्कार्थमधुंवनिचालिनातेष्ठ
॥ भगवायसानिष्ठमस्तकालिंदीतिरिजा
॥ एनस्त्रीरुदाहुलापुकत्वा॥ पा याव
॥ चीवेमुलकदानकारपुकमुकखाउनिकंदमु
॥ छफुलकरितातकर्तिमुकमुकमंत्रत्रुपुनि
॥ देवजाणुमिवाहुरुपदेष्टेऽदर्शदर्शनेलाभ
॥ लनेस्तनवकलेउकलभानीमानसअनुकु
॥ जजेहाषुके तेहुलाणेवायु
॥ दुलबोधुनधे तेहुलकमीनपेटनि

असेपापमत्तदन ७
॥ मंशाककलपिकलसेफलतुकसिंच०८३
॥ अंजुकीधुनिभसनिविजनिवसनिभज
॥ नेश्चीहरिचेपुत्रनकरितभत्रनचीप्रीय
॥ तालारे॥ याना द्वायरामानसिवि०८४३ ब०
॥ केसोसितसेउछपुटहुछमृगहेखुनमणहु
॥ छकुछगउयाहुछोकुलोत्समाहाकीकुरेवत
॥ चीकायहक्तताहुनमक्तसिक्काहीदमनतु
॥ वाकेलेहुछारश्चिलिदिसासिक्काछसारथी
॥ अरवडहुछमुनिष्ठित्विहुकरुल
॥ द्विनमनकरित्वाश्चानप्रदृशीणास
॥ शीर्वनीतहस्तिहुदेउनगवतभणार्थ
॥ विचक्षणाश्चानप्रदृशीणासिक्काछसारथी
॥ श्वणालमृदभत्त्रुणात्यजुनियासि
॥ अंलिजाष्विकलगुणापरिगुणासिगुण
॥ छत्रक्षुयाश्चाननेस्तनित्वाभावदिसो
॥ गस्तगस्तगमगभाणसतीत्वगगनधरुनि
॥ जानगभाणवत्सकलभाणवत्सकलभक्तिभा
॥ ठालोरहोप्या०१७० त्वमि०१७१-१७२
॥ असेपुराष्ट्रस्तवनकरुनि१७२-१७३का
॥ सोप्रतकलकीअवतारतालोनसहाय्य
॥ छंस्त्रादिभगवत्त्रित्वासामज्जेनो

(54)

स्वप्रित्रमली - नन्दगढ़ीरुद्धिमाला

वल्लभेन्नमच्छिंद्यमला

पंडितमालामुख्यमृगयंशंह

रन्दगढ़ीत्याभ्युपि वै

क्षमतालालाभिपन्निरुद्धिमला

ग्रन्थेपमित्यामध्यमालेन्द्रिय

(55)

यस्त्रीमालीमालीक्षेत्र वै

क्षमतालालाभिपन्निरुद्धिमला

द्वारामालालाभिपन्निरुद्धिमला

वै

~~7~~

१८०७ - इत्यान्वितास्त्रिमला

(56)

मालामालामालामालामाला

~~१८०८~~

स्वप्रित्रमली

स्वप्रित्रमली - नन्दगढ़ीरुद्धिमाला

वल्लभेन्नमच्छिंद्यमला

पंडितमालामुख्यमृगयंशंह

रन्दगढ़ीत्याभ्युपि वै

क्षमतालालाभिपन्निरुद्धिमला

द्वारामालालाभिपन्निरुद्धिमला

वै

~~१८०९~~

(57)

स्वप्रित्रमली - नन्दगढ़ीरुद्धिमाला

वल्लभेन्नमच्छिंद्यमला

पंडितमालामुख्यमृगयंशंह

रन्दगढ़ीत्याभ्युपि वै

क्षमतालालाभिपन्निरुद्धिमला

द्वारामालालाभिपन्निरुद्धिमला

वै

~~१८१०~~

(59)

स्वप्रित्रमली - नन्दगढ़ीरुद्धिमाला

वल्लभेन्नमच्छिंद्यमला

पंडितमालामुख्यमृगयंशंह

रन्दगढ़ीत्याभ्युपि वै

क्षमतालालाभिपन्निरुद्धिमला

द्वारामालालाभिपन्निरुद्धिमला

वै

~~१८११~~

(60)

स्वप्रित्रमली - नन्दगढ़ीरुद्धिमाला

वल्लभेन्नमच्छिंद्यमला

पंडितमालामुख्यमृगयंशंह

रन्दगढ़ीत्याभ्युपि वै

क्षमतालालाभिपन्निरुद्धिमला

द्वारामालालाभिपन्निरुद्धिमला

वै

(61)

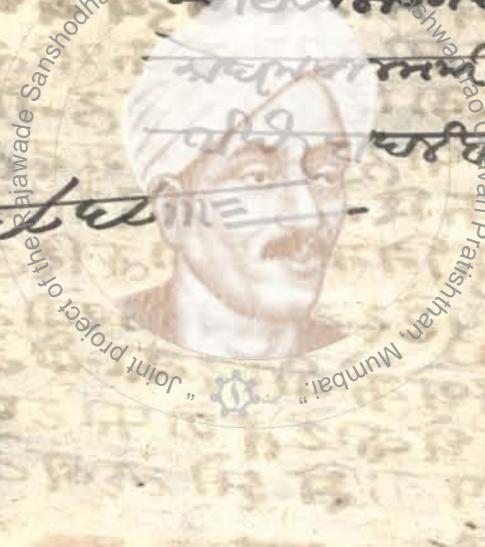
(62) राजावाडे संशोधन मंडळ, धुले आणि लोखवारा ग्रन्थालय
संस्कृत विभागातील विद्यार्थी नांग

(63) बाबू अमराळा कृष्ण
३३८५ = ३३८५
४३८१ = ४३८१
४३८१.०० = ४३८१.००
२१८ = २१८
१०० = १०० २१८१.००
२६०९६ = २६०९६
= १११०

(64)

राजावाडे संशोधन मंडळ, धुले आणि लोखवारा ग्रन्थालय
कालीन संस्कृत विभाग
देशगति विभागातील विद्यार्थी
वासिनी विभागातील विद्यार्थी
१००० वासिनी विभागातील विद्यार्थी

(65)



(66)

= ११२२६

✓ ११२२६
मुक्तवाचमित्र ११२२६
मुक्तवाचमित्र ११२२६
मुक्तवाचमित्र ११२२६

(68)

= ११२२६
पूर्व विभाग
मुक्तवाचमित्र ११२२६

(69)

मुक्तवाचमित्र ११२२६
मुक्तवाचमित्र ११२२६
मुक्तवाचमित्र ११२२६

(70)

संस्कृत विभागातील विद्यार्थी
विभागातील विद्यार्थी
मुक्तवाचमित्र ११२२६

कोहाली

प्र० २०१८. (संग्रहालय का नाम)

७। २०३८

१५) ~~राजिकालीन ग्रन्थ~~.

प्र० २०१८.

(१)

~~२५९-४३६३~~

~~चित्रित~~

~~सं~~

७। २०१८. ~~कोहाली ग्रन्थ का नाम~~

~~मंडिर परिवर्तन एवं चित्रित~~

(२६) ~~ग्रन्थ इति ग्रन्थ चित्रित~~

(२)

~~चित्रित ग्रन्थ का नाम~~

~~७। २०१८.~~

~~सं~~

~~दावीकरण ग्रन्थ~~

~~कालीन ग्रन्थ~~

~~कालीन ग्रन्थ~~

(२७)

~~दावीकरण~~

~~सं~~

२५२९।।१.।

~~चित्रित ग्रन्थ का नाम~~

~~दावीकरण ग्रन्थ~~

१०८।।

~~दावीकरण ग्रन्थ~~

~~सं~~

(२८) ~~दावीकरण ग्रन्थ~~

~~दावीकरण ग्रन्थ~~

~~सं~~

२५२९।।८.।

~~दावीकरण ग्रन्थ~~

~~दावीकरण ग्रन्थ~~

~~सं~~

(२९) ~~दावीकरण ग्रन्थ~~

~~दावीकरण ग्रन्थ~~

विषय

~~दावीकरण~~

(३०) ~~दावीकरण~~

~~दावीकरण~~

~~दावीकरण~~

~~दावीकरण~~

~~दावीकरण~~

~~महाराष्ट्रातील प्रदेश~~

~~महाराष्ट्रातील प्रदेश~~

~~महाराष्ट्रातील प्रदेश~~

(28)

~~महाराष्ट्रातील प्रदेश~~

महाराष्ट्रातील प्रदेश

(29)

~~प्रदेश~~

~~महाराष्ट्रातील प्रदेश~~

~~महाराष्ट्रातील प्रदेश~~



(30)

~~प्रदेश~~

२०

१५

प्रदेश

२

प्रदेश

२०

प्र

(31)

१८ प्रदेश

१९ प्रदेश

२०

८

~~महाराष्ट्रातील प्रदेश~~

~~महाराष्ट्रातील प्रदेश~~

~~महाराष्ट्रातील प्रदेश~~

उत्तरांगन

(83)

वार्ता वार्ता
वार्ता

वार्ता वार्ता

वार्ता वार्ता

३५६॥३॥ यमार्त

२२०॥२॥ विष्णुवार्ता

७१॥— विष्णुवार्ता

७१॥१॥ विष्णुवार्ता

४४

४४४॥१॥ ज्ञानीवार्ता

३६३॥१॥ विष्णुवार्ता

९४२॥३॥— विष्णुवार्ता

३२१॥१॥ विष्णुवार्ता

३२१॥२॥ विष्णुवार्ता

४४४॥२॥— विष्णुवार्ता

(86)

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

(87)

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

(88)

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

(89)

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया

(90)

	२४३०७८८५
(91)	१९७६॥ विद्युतीप्रभ
	१८४७॥ विद्युतीप्रभ
	१६७१॥ = विद्युतीप्रभ
	२२१॥ विद्युतीप्रभ
	३२९॥३१॥ विद्युतीप्रभ
	३०१॥३०॥ विद्युतीप्रभ
	१८४७॥१८॥ विद्युतीप्रभ
(92)	२०३६॥ = विद्युतीप्रभ
	१९६५॥ विद्युतीप्रभ
	२०९॥२०॥ विद्युतीप्रभ
	१८२९॥१८॥ विद्युतीप्रभ
(93)	३३०॥ विद्युतीप्रभ
	३३९॥३१॥ विद्युतीप्रभ
	१८३॥१८॥ विद्युतीप्रभ
०५	२७८०८५८५
	३७७२९॥= विद्युतीप्रभ
(95)	२७८२२८५८५
	२७८२२८५८५
(96)	२३४१५८५
	२३४१५८५
(97)	२३४१११
	२३४१११
(98)	२०४१११
	२०४१११
(99)	२३४११
	२३४११
(100)	२०४११
	२०४११
(101)	१९६५६
	१९६५६
(102)	१९८२३॥१८॥ विद्युतीप्रभ

Digitized by the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the
Yashwantrao Chavhan Sanskritisation Project, Mumbai

२७७२९।।

२२५०८।।

(२३९६१३।।) ज्ञाता अमान

(१००) ee आदराप्रस्तावना

तिट्ट्यालीयालंग

२७६५।। अक्षयप्रिया प्रिया

यास

२०५०० लेखनाली

२५६।। अल्लाया गोपा

यासरीमिली

(२७६१।।) अक्षय

२७६५।। अक्षय

दुष्ट्याला

२०००० उम्मी

२७६५।। अक्षय

२७६५।।

२७६५।।

(१०१) ७३०००० अक्षयप्रिया

२०००० अक्षय

३०००० अक्षय

७३००००

२२५०८।। अक्षय

त्याम

(२३९६१३।।)



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com